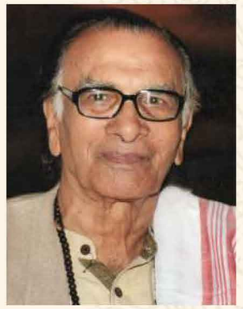

जतिन गोस्वामी

अकादेमी रत्न

JATIN GOSWAMI

Fellowship of Sangeet Natak Akademi

Born on 2 August 1933 in Dergaon, Assam, Shri Jatin Goswami was initially trained in the dance and music of the Vaishnava Sattras by his father, Shri Dharanidhar Goswami. Subsequently, he received his advanced training in the art form under Guru Maniram Dutta Muktiyar, and Roseswar Saikia Borbayan. He has also learnt ankiya bhaona, and also folk dance and music of Assam under Shri Bishnu Prasad Rabha.

Since the 1960s, Shri Goswami has also worked consistently for the propagation and development of Sattriya. He established the Pragjyoti Kala Parishad, an organization dedicated to the study of Sattriya dance traditions and he also formed a repertory company performing Sattriya dance and ankiya nats. He has created a number of experimental works as well as dance-dramas employing the Sattriya arts and presented them in various prestigious festivals within the country and abroad including Dweep Mahotsav, Andaman and Nicobar Islands; Khajuraho Dance Festival, Khajuraho; Ramlila Festival, Ayodhya; and numerous festivals organized by Sangeet Natak Akademi. A visiting lecturer at the Assam Sattriya Music College, Shri Jatin Goswami has authored several books on Sattriya dance such as *Mati Akhora*, *Nrityara Prathamik Hasta Parichay*, *Nritya Shiksha*, *Nrityara Paribhashik Sabda aru Sangya* and *Jhumura Nach Nadu Bhangee*.

He has received several honours for his contribution to Sattriya dance. These include the Best Dance Director Award conferred by the Government of Assam; the Bharatiyam Samman bestowed by the East Zone Cultural Centre; Shiromoni by Asom Sattra Mahasabha; the Sangeet Natak Akademi Award (2004); and the Padma Shri (2008).

Shri Jatin Goswami is elected Fellow of Sangeet Natak Akademi for his contribution to Indian dance.

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018

असम के दरगांव में 2 अगस्त 1933 को जन्मे, श्री जतिन गोस्वामी ने प्रारम्भ में वैष्णव सत्रों के नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण अपने पिता श्री धरणीधर गोस्वामी से प्राप्त किया। इसके बाद, आपने गुरु मनीराम दत्ता मुक्तियार, और रोसेश्वर सैकिया बोरबायन के सानिध्य में उन्नत प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी कला को निखारा। श्री बिष्णु प्रसाद राभा के मार्गदर्शन में आपने अंकिया भाओना, और असम के लोक नृत्य और संगीत भी सीखे।

1960 के दशक से ही श्री गोस्वामी सत्रिय नृत्य के प्रचार–प्रसार और विकास के लिए लगातार प्रयासरत् रहे हैं। आपने प्रागज्योति कला परिषद की स्थापना की, जो सत्रिय नृत्य परम्पराओं के अध्ययन को समर्पित एक संगठन है। आपने सत्रिय नृत्य और अंकिया नाटों का प्रदर्शन करने वाली एक रेपर्टरी कम्पनी की भी स्थापना की है। आपने सत्रिय कलाओं को नियोजित करने वाले कई प्रयोगात्मक कार्यों के साथ-साथ नृत्य.नाटकों का निर्माण किया है और उन्हें देश-विदेश में आयोजित विभिन्न उत्सवों में प्रस्तुत किया है।

द्वीप महोत्सव, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह; खजुराहो नृत्य महोत्सव, खजुराहो; संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आयोजित रामलीला महोत्सव, अयोध्या और अन्यान्य उत्सवों में आपने प्रस्तुतियाँ दी है। असम सत्रिय संगीत महाविद्यालय के अतिथि व्याख्याता, श्री जतिन गोस्वामी ने सत्रिय नृत्य पर माटी अखोरा, नृत्यारा प्राथमिक हस्त परिचय, नृत्य शिक्षा, नृत्यारा पारिभाषिक शब्द अरु संज्ञा और झुमुरा नाच नाडु भंगी जैसी कई पुस्तकों की रचना की है ।

सत्रिय नृत्य में योगदान के लिए आपको कई सम्मान मिले हैं, जिनमें असम सरकार द्वारा प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशक पुरस्कार; पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा दिया गया भारतीयम सम्मान; असम सत्र महासभा द्वारा शिरोमणि; संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (2004) और पद्मश्री (2008) शामिल हैं।

भारतीय नृत्य के क्षेत्र में योगदान के लिए श्री जतिन गोस्वामी को संगीत नाटक अकादेमी का रत्न सदस्य चुना गया है।

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018